www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# महात्मा गाँधी

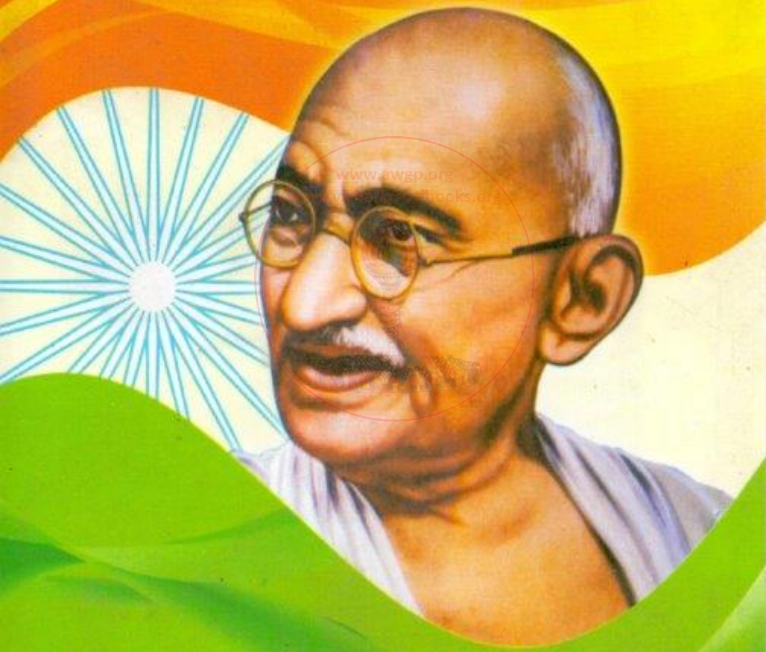

— श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

# वर्तमान जगत् के युग-पुरुष—महात्मा गाँधी

सन् १९१३ में दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए गाँधी जी उस देश की सरकार से कठिन संघर्ष कर रहे थे। यह झगड़ा यद्यपि वर्षों से चल रहा था, पर अब एक प्रकार से उसके निबटारे का समय आ गया था। इसलिए उस देश के प्रधान शासक जनरल स्मट्स के साथ गाँधी जी की समझौते की बातें चल रही थीं और उसके लिए वे प्रिटोरिया जाने वाले थे। उस अवसर पर दीनबंधु एंडरूज भी वहाँ उपस्थित थे और समझौते के कार्य में सहायता देने के लिए वे भी गाँधी जी के साथ चलने को तैयार हो गए। ये दोनों शाम के चार बजे डरबन के स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ के अंग्रेज स्टेशन मास्टर ने इनको देखते ही पूछा—"हैलो गाँधी ! हाउ थिंग्स गोइंग विद यू" (कहो गांधी ! क्या हाल-चाल है ?) गाँधी जी ने कहा—"मैं रात को आठ बजे वाली 'काफिर एक्सप्रेस' से प्रिटोरिया जा रहा हूँ, जनरल स्मट्स ने बात-चीत के लिए बुलाया है।" स्टेशन मास्टर कहने लगा—"अच्छा हो कि आप "काफिर एक्सप्रेस" के बजाय अभी ५ बजे जाने वाली "योरोपियन-मेल" से चले जाएँ। आज रात १२ बजे से रेल वालों की जनरल हड़ताल होने वाली है। अगर आप "काफिर एक्सप्रेस" से जाएँगे तो कहीं बीच में ही पड़े रहेंगे, प्रिटोरिया पहुँचना असंभव हो जाएगा।" इस पर वे दोनों योरोपियन मेल से ही चल दिए। स्टेशन मास्टर की बात बिल्कुल ठीक निकली। "काफिर एक्सप्रेस" बीच में ही कहीं रुक गई और उसके बाद ५ दिन तक देश में कोई रेल चली ही नहीं।

प्रिटोरिया में सबसे पहले गाँधी जी "प्रिटोरिया न्यूज" नामक पत्र के संपादक से मिलने गए, तो उसने पूछा—"क्या हिंदुस्तानी लोग इस जनरल हड़ताल में भाग लेंगे ?" गाँधी जी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


कहा—"नहीं, हर्गिज नहीं। हम गवर्नमेंट की कठिनाई से अनुचित लाभ उठाना नहीं चाहते। हम न्याययुक्त युद्ध करना चाहते हैं, इसलिए जब तक हड़ताल जारी रहेगी, हम अपना सत्याग्रह-संग्राम प्रारंभ नहीं करेंगे।" संपादक ने पूछा—'क्या मैं आपकी इस बात को अखबार में छाप दूँ ?" गाँधी जी ने छापने से इनकार कर दिया। फिर संपादक ने यह समाचार सुनाया कि—"रेल वालों की हड़ताल बड़ी भयंकर है और दस-बारह घंटे के भीतर ही देश भर में 'मार्शल लॉ' (फौजी कानून) लागू कर दिया जाएगा।" यह सुनकर एंडरूज साहब को बड़ी चिंता हुई और गाँधी जी से कहा—"आप सत्याग्रह स्थगित होने की बात को इसी समय छप जाने दीजिए, अन्यथा "मार्शल लॉ" जारी होने के पश्चात् जब हिंदुस्तानी यह कहेंगे कि, हम जनरल हड़ताल में भाग नहीं लेंगे, तो गवर्नमेंट यही समझेगी कि वे "मार्शल लॉ" के भय से ही ऐसा कर रहे हैं। उस समय वह हर्गिज यह नहीं मानेगी कि, आपने सद्भावना बुद्धि से प्रेरित होकर यह कार्य किया है।" बहुत कहने-सुनने पर गाँधी जी इसके लिए राजी हुए और संपादक ने उनका "इंटरव्यू" लेकर भारतीयों की स्थिति को स्पष्ट कर दिया।

दूसरे दिन जनरल स्मट्स से समझौते की बात-चीत शुरू हुई। पर हड़ताल के कारण देश में बड़ी अशांति फैल गई थी और उसके कारण शांति-रक्षा के लिए "स्मट्स" को बहुत अधिक व्यस्त रहना पड़ता था। गाँधी से बात-चीत करने का उनको बहुत कम अवसर मिलता था। इसलिए समझौते का कार्य धीरे-धीरे ही अग्रसर हुआ। इसी बीच गाँधी जी के पास तार आया कि—"आपकी पत्नी अत्यंत बीमार है और वह अंत समय में आपको देखना चाहती है।" समस्या बड़ी कठिन थी। इधर देश का महत्त्वपूर्ण कार्य, उधर पत्नी का मरणासन्न होना। फिर भी गाँधी जी ने कर्तव्य-पालन को मुख्य समझकर यही उत्तर दिया—"यहाँ पर आवश्यक काम है, अभी मैं नहीं आ सकता।" श्री एंडरूज को इससे बड़ी व्यथा हुई और वे गाँधी जी से बिना पूछे ही "स्मट्स" के पास पहुँचे और यह खबर उनको बता दी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



इस घटना का प्रभाव जनरल पर भी बहुत अधिक पड़ा और वे अन्य कामों को रोककर शीघ्र ही समझौता करने में लग गए। यद्यपि परिस्थिति बड़ी कठिन थी और गाँधी जी न्याय और सत्य का प्रश्न उठने पर किसी भी हानि की चिंता नहीं करते थे, फिर भी एंडरूज साहब के उद्योग से जनरल स्मट्स मान गए और समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए गए।

महात्मा गाँधी (सन् १८६९ से १९४८) आजीवन इसी प्रकार सत्य और कर्तव्य-पालन के लिए प्रयत्नशील रहे और इसके लिए कष्ट तो सहन किया ही, अनेक बार प्राणों की बाजी भी लगाते रहे। उनके पिता कर्मचंद जी और माता पुतलीबाई भी बड़े कर्तव्यनिष्ठ और धर्म परायण वैष्णव थे और उनके चरित्र का प्रभाव उन पर आरंभ से ही पड़ा। इसलिए स्कूल में भी जहाँ अन्य लड़के तरह-तरह की चालाकियों से काम लेते थे, वे अपनी सत्यनिष्ठा का परिचय देते रहे। एक बार परीक्षा देते समय सब लड़कों ने एक दूसरे की नकल करके सब प्रश्न ठीक हल कर दिए, पर मोहनदास (गाँधी जी) ने अध्यापक के प्रेरणा देने पर भी वैसा नहीं किया और फलस्वरूप उनका एक प्रश्न गलत हो गया। मैट्रिक की परीक्षा दे लेने के बाद विलायत जाकर बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने का निश्चय हुआ। घर के अन्य लोग तो इससे बहुत प्रसन्न हुए कि—घर का एक व्यक्ति इतना बड़ा दर्जा पा जाएगा, पर माताजी जल्दी राजी न हुईं। उन्होंने सुन रखा था कि, विलायत में खान-पान का कोई प्रतिबंध नहीं रहता, इसलिए मनुष्य "धर्म भ्रष्ट" हो जाता है। जब "मोनिया" गाँधीजी ने बहुत आग्रह किया तो माता ने कहा कि—यदि तुम मेरे सामने तीन बातों की प्रतिज्ञा करो तो मैं अनुमति दे सकती हूँ। वे प्रतिज्ञाएँ हैं—(१) कभी मांस न खाना (२) मद्यपान न करना (३) पराई स्त्री से व्यभिचार की बात मन में न लाना। गाँधी जी ने माता के सामने उक्त प्रतिज्ञाएँ कर लीं, आगामी जीवन में ये प्रतिज्ञाएँ ही उनके लिए "ढाल" बन गईं। विलायत में अध्ययन करते समय और बाद में भी इनको तोड़ने के कई गंभीर और लुभावने अवसर उनके सामने आए, पर वे "माता की प्रतिज्ञा" का ध्यान रखकर उनमें गिरने से बच गए। और तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


क्या, एक-दो बार मित्रों द्वारा वेश्यालय में ले जाए जाने पर भी वे वहाँ से बिना स्त्री-प्रसंग किये ही वापस चले आए।

गाँधी जी का वास्तविक जीवन-संघर्ष सन् १८९३ से आरंभ होता है, जब डेढ़ वर्ष तक बंबई और राजकोट में बैरिस्टरी के धंधे में सफलता प्राप्त न होने पर वे एक भारतीय व्यापारी के मुकदमे की पैरवी करने दक्षिण अफ्रीका गए। वहाँ अदालती काम तो उनको थोड़ा ही करना पड़ा, पर भारतवासी होने के कारण कदम-कदम पर उनको अपमानजनक व्यवहार सहन करना पड़ा, जिससे उनकी आँखें खुल गईं। वहाँ के गोरे सभी भारतवासियों को कुली-मजदूर मानते थे और इसलिए गाँधी जी को 'कुली-बैरिस्टर' के नाम से पुकारते थे। केवल भारतवासी होने के कारण ही फर्स्ट क्लास का टिकिट होने पर भी उनको उसमें चढ़ने से रोका गया और उनका सामान प्लेटफार्म पर फेंक दिया गया। होटल में ठहरने को जगह न मिल सकी, सरकारी कार्यालय से चपरासी ने बाहर निकाल दिया। इस प्रकार की अनेक घटनाओं से उनको प्रतीत हुआ कि, यहाँ पर हमारे देशवासियों को कितने अन्याय और असुविधाएँ सहन करनी पड़ रही हैं। कुछ मित्रों के आग्रह से उन्होंने वहाँ रहकर इस अन्याय के प्रतिरोध का निश्चय कर लिया।

परिणाम यह हुआ कि बीस वर्ष तक गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका के स्वार्थी और क्रूर गोरों से जूझते रहे। अपनी धार्मिक प्रवृत्ति और वहाँ के प्रवासी भाइयों की स्थिति को ध्यान में रखते हुये उन्होंने लड़ाई का एक नया ही तरीका निकाला। तब तक राजनीतिक आंदोलनों में प्रायः शक्ति और हिंसा का प्रयोग किया जाता था, पर गाँधी जी ने अपने आंदोलन का नाम "सत्याग्रह" रखा। उन्होंने कहा कि, हम सरकार की किसी भी अन्याय युक्त आज्ञा का पालन नहीं करेंगे और इसके फलस्वरूप जो भी जेल, मारपीट, लूट-मार आदि आपत्तियाँ हमारे ऊपर आएँगी, उनको शांतिपूर्वक सहन करेंगे। उनका विश्वास था कि, इस प्रकार सत्य और अहिंसा का अवलंबन करने से निष्ठुर व्यक्ति का भी हृदय पसीज जाता है और वह अन्याय से पीछे कदम हटा लेता है। वास्तव में गाँधी जी का यह सत्याग्रह-संग्राम संसार के लिए एक अद्भुत दृश्य था। एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


तरफ नृशंस गोरे डंडा, गोली और जेलखानों द्वारा बर्बरता का प्रदर्शन कर रहे थे और दूसरी तरफ हजारों निहत्थे भारतीय पुरुष-स्त्री, बच्चे राम-नाम लेते हुए मार खा रहे थे और जेल जा रहे थे। उनमें से अनेक मर भी गए। पर उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया। इन समाचारों से भारत में तो तुमुल आंदोलन छिड़ ही गया और भारतीय नेताओं से लेकर तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंज तक ने इन गोरे अत्याचारियों की भरपूर निंदा की। साथ ही समस्त सभ्य संसार में दक्षिण अफ्रीका वालों की आलोचना होने लगी और सबने उनके व्यवहार को भर्त्सना योग्य कहा।

अंत में इंगलैंड की ब्रिटिश सरकार का आसन भी हिल गया और उसके दबाव से दक्षिण अफ्रीकन शासकों को अपनी बहुत-सी अनुचित और अवैध आज्ञाएँ वापस ले लेनी पड़ीं। गाँधी जी को विमल-विजय प्राप्त हुई और उनका नाम संसार के कोने-कोने में एक महामानव के रूप में प्रसिद्ध हो गया। संसार के हजारों मनीषियों ने बड़े प्रशंसनीय शब्दों में उनका गुणगान किया। फ्रांस के जगत् प्रसिद्ध दार्शनिक "रोम्याँरोलाँ" ने मुक्त कंठ से घोषित किया—"महात्मा गाँधी का नाम सदैव उस श्रेणी में लिखा जाएगा जो मनुष्य मात्र को सुखी बनाने में अपने जीवन का बलिदान करते हैं।

## भारतवर्ष का स्वाधीनता-संग्राम

दक्षिण अफ्रीका के भारतवासियों की समस्या का तत्कालीन हल हो जाने पर महात्मा जी ने अपना कार्यक्षेत्र भारत को बनाने का विचार किया। इसके अतिरिक्त सत्याग्रह आंदोलन में बरसों तक बहुत अधिक परिश्रम करने और सरकार द्वारा तरह-तरह की यातना सहन करने के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य भी निर्बल पड़ गया था। यह देखकर आपके मित्रों ने आपको भारत जाकर कुछ समय विश्राम करने की सलाह दी। इसलिए जनवरी, १९१५ में आप भारत चले आए। यहाँ पर आपके कार्य में सबसे अधिक सहायता देने वाले श्री गोपाल कृष्ण गोखले ही थे। इसलिए जहाज से उतरते ही सबसे पहले आप उन्हीं से मिलने पूना गए। पर वे उस समय मरणांतक बीमारी में चारपाई पर पड़े थे। गोखले जी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


आपको "सरवेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी" में रहकर काम करने की सम्मति दी। पर आपने अपने कार्य क्षेत्र को इस प्रकार सीमित बनाना अच्छा न समझा और भारत में सबसे मिलजुल कर यहाँ की परिस्थिति का अध्ययन कर लेना आवश्यक समझा। श्री गोखले ने उनको यह भी सम्मति दी कि—एक वर्ष तक किसी राजनीतिक आंदोलन में नहीं पड़ना, वरन् देश भ्रमण करके और नेताओं से मिलकर यहाँ की परिस्थिति को अच्छी तरह हृदयंगम करने का प्रयत्न करना। इसलिए वे उस वर्ष मद्रास, कलकत्ता, पटना, दिल्ली जैसे सभी महत्त्वपूर्ण नगरों में गए और प्रमुख नेताओं से विचार-विमर्श किया। इसके बाद अहमदाबाद पहुँचकर सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की, जहाँ भावी कार्यक्रमों के लिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जा सके। उन्हीं दिनों आपको हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन उत्सव में निमंत्रित करके बुलाया गया। वहाँ आपने बड़े-बड़े राजाओं को उनके मुँह पर ऐसा फटकारा कि वे सभा छोड़कर उठकर चले गये और चारों तरफ एक कोहराम मच गया। यद्यपि गाँधी जी को अपना भाषण बीच में ही रोक देना पड़ा, पर भारतवासियों को उसी दिन यह विदित हो गया कि कोई प्रज्ज्वलित व्यक्तित्व भारत भूमि पर अवतीर्ण हो गया है, जो शीघ्र ही देश को किसी अभूतपूर्व संघर्ष के पथ पर अग्रसर करेगा।

कुछ दिन चंपारन और खेड़ा के सत्याग्रह में अपनी कार्य पद्धति की एक झलक दिखलाकर आपने सन् १९१९ में "रौलट एक्ट" के विरोध-रूप में अपना देशव्यापी ऐतिहासिक आंदोलन आरंभ किया। वह आंदोलन कभी उठता, कभी गिरता २५ वर्ष तक चलता रहा। उसमें गाँधी जी को बार-बार जेल जाना पड़ा और विशेष अवसरों पर लंबे-लंबे उपवास करके महत्त्वपूर्ण समस्याओं को हल करना पड़ा। उनके सामने केवल अंग्रेजी सरकार से लड़ने का ही सवाल न था, वरन् देश को स्वराज्य अथवा "आत्म-शासन" के योग्य बनाना भी था। इसलिए वे सरकार के अन्यायपूर्ण कार्यों का विरोध करने के साथ ही स्वदेशी-प्रचार, हिंदू-मुस्लिम एकता, हरिजनोद्धार, ग्राम-उद्योगों का विकास, सामाजिक कुरीतियों का निवारण, राष्ट्र-भाषा प्रचार आदि कार्यों के लिए भी भरपूर प्रयत्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


करते रहे। भारतीय जनता की गरीबी से व्यथित होकर उन्होंने भी उन्हीं की तरह रहना आरंभ कर दिया और सब वस्त्रों को त्याग कर केवल एक लँगोटी पहनकर ही निर्वाह करने लगे। इन बातों से देश की करोड़ों जनता ने उनको अपना उद्धारकर्ता मान लिया और उनके आह्वान पर लाखों व्यक्ति राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेकर जेल जाने और प्राण देने को तैयार हो गये।

## सविनय अवज्ञा-आंदोलन का श्रीगणेश—

गाँधी जी के आंदोलन और उनके व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष प्रभाव संसार को तब दिखलाई पड़ा, जब सरकार ने देशव्यापी विरोध की अवहेलना करके स्वाधीनता-आंदोलन को कुचलने वाला "रौलट एक्ट" पास कर दिया और गाँधी जी ने ६ अप्रेल १९१९ को इस अन्याय के विरुद्ध देशव्यापी हड़ताल, उपवास और विरोध-सभाएँ करने की घोषणा की। जनता ने महात्मा जी के इस आदेश का पालन इतने अधिक उत्साह और दृढ़ता से किया कि सरकार और सारा संसार दंग रह गया। हम अपने प्रत्यक्ष अनुभव से यह कह सकते हैं कि, वैसी संपूर्ण और स्वेच्छापूर्वक की गई देशव्यापी हड़ताल न पहले कभी देखने में आई थी और न बाद में कभी हो सकी। अमृतसर (पंजाब) में सरकारी अफसरों ने गोली चलाकर जनता को उत्तेजित कर दिया, तो वहाँ भयंकर उपद्रव हो गया, जिसमें पाँच अँग्रेज मारे गये और दो बैंक जला दिये गए। इसका बदला लेने के लिए जनरल डायर ने आगामी १३ अप्रेल को उसी नगर के जलियाँवाला बाग में होने वाली एक सार्वजनिक सभा पर सशस्त्र फौज को लेकर हमला किया, जिसमें सैकड़ों व्यक्ति जान से मार दिए गए, जिनमें अनेकों बच्चे भी थे।

गाँधी जी को इस हत्याकांड से दुःख तो बहुत हुआ, पर अब उन्होंने उस अन्यायी सरकार को उखाड़ने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इससे पहले वे अंग्रेजों की सज्जनता और सच्चाई पर बहुत विश्वास रखते थे और महायुद्ध के अवसर पर उन्होंने भारतवासियों से सरकार की सब तरह से सहायता करने की अपील की थी। इतना ही नहीं, उन्होंने स्वयं सेना के लिए सैनिकों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


की भर्ती का आंदोलन उठाया था, जिसके कारण अनेक नेता और कार्यकर्ता उनसे नाराज भी हो गए। पर जब उनकी "राजभक्ति" का सरकार ने ऐसा इनाम दिया, तो उनका मनोभाव बदल गया। वे समझ गए कि, अंग्रेज भारतवर्ष को एक प्रकार से अपना शिकार समझते हैं और अपनी राजी से कभी इसको न्याययुक्त अधिकार नहीं देंगे। बस उन्होंने ऐसी अन्यायी सरकार के विरुद्ध "असहयोग" की घोषणा कर दी। वकीलों से अदालतों का, विद्यार्थियों से सरकारी स्कूलों का और अन्य लोगों से सरकारी नौकरियों का बहिष्कार करने को कहा गया। लोगों ने स्वदेशी वस्त्र और विशेष रूप से खादी के व्यवहार की प्रतिज्ञा की और हजारों नगरों में विलायती वस्त्रों की होली जलाई गई।

इस प्रकार समस्त देश में जाग्रति और उत्साह का एक ऐसा तूफान उठा कि, कुछ समय के लिए सरकार की स्थिति डाँवाडोल हो गई। उस समय गाँधी जी ही देश के सच्चे अधिनायक जान पड़ते थे और छोटे-बड़े सब लोग उनकी आज्ञाओं का दैवी आदेश की तरह पालन कर रहे थे। कुछ ही महीनों में तीस हजार व्यक्ति सरकारी कानूनों को तोड़कर जेल चले गये, जिनमें पं० मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय, देशबंधु चितरंजन दास, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस जैसे महान् पुरुष भी सम्मिलित थे। बारदौली (गुजरात) में सरदार पटेल ने लगान बंदी का आंदोलन छेड़ने की घोषणा कर दी। उसी समय उत्तर प्रदेश के चौरीचौरा कस्बे में उपद्रव हो गया और उत्तेजित जनता ने वहाँ के थाने को घेरकर आग लगा दी, जिसमें आठ-दस सिपाही जलकर मर गये। गाँधी जी ने अपना आंदोलन अहिंसा और कष्ट सहन के आधार पर चलाया था, अब उसमें हिंसा का समावेश होते देखकर उन्होंने उसे स्थगित कर दिया। अनेक नेताओं ने इसका विरोध भी किया, पर गाँधी जी अपने निश्चय पर अटल रहे, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि अभी भारतीय जनता इतनी संगठित और शक्तिशाली नहीं हो गई है कि हिंसात्मक कार्य करके अंग्रेजों की सैन्य शक्ति को परास्त कर सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


इसके पश्चात् गाँधी जी के कुछ लेखों पर राजद्रोह का अभियोग चला कर सरकार ने गाँधी जी को ६ वर्ष की जेल का दंड दे दिया। इस पर असहयोग आंदोलन कुछ समय के लिए दब गया, पर देश में राजनैतिक जाग्रति तथा संगठन की निरंतर वृद्धि होती रही। यह देखकर सरकार ने समझ लिया कि, अब भारतवर्ष को केवल पाशविक शक्ति के द्वारा अधीन नहीं रखा जा सकता। इसलिए नये शासन-सुधारों का वायदा किया गया और इस संबंध में भारतवासियों के विचार जानने के लिए "सायमन कमीशन" नाम का एक प्रतिनिधि मंडल इंगलैंड से भेजा गया। पर कांग्रेस नेताओं को इस तरह के दिखावटी कार्यों से संतोष नहीं हुआ और देश भर में "सायमन कमीशन" का बहिष्कार और प्रदर्शन किए गए। इस आंदोलन में लाला लाजपतराय, पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० गोविंद वल्लभ पंत आदि जैसे देश पूज्य नेताओं ने भी पुलिस की लाठियाँ खाईं। लाला जी का तो इसी घटना के फलस्वरूप देहांत ही हो गया।

यह देखकर जनता का जोश फिर उभरा और उसे देखकर गाँधी जी सन् १९३० में कानून भंग की घोषणा करके स्वयं नमक कानून को तोड़ने गुजरात के 'डांडी' नामक स्थान में पहुँचे। उसी समय देश के और भी हजारों स्थानों में नमक कानून तोड़ा गया, जिसमें लाखों व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए। आंदोलन को बहुत अधिक बढ़ते देखकर सरकार ने फिर गाँधी जी से समझौते की बात-चीत चलाई और शासन-सुधार के संबंध में अंग्रेज शासकों से बात-चीत करने के लिए उनको इंगलैंड बुलाया। वहाँ एक "राउंड टेबल कान्फ्रेंस" की गई, जिसमें इंगलैंड और भारत के सब दलों के नेताओं ने भाग लिया। यद्यपि इस कान्फ्रेंस का कोई परिणाम नहीं निकला, पर इंगलैंड में बहुसंख्यक अंग्रेजों ने गाँधी जी का बड़ा सम्मान किया और स्वयं सम्राट् के महलों में उनको निमंत्रित करके राज-परिवार से भेंट कराई गई। संसार के सबसे बड़े और वैभवशाली बादशाह के महलों में लंगोटीधारी गाँधी जी का प्रवेश एक ऐसा दृश्य था, जिसकी कल्पना भी उसके पहले कोई नहीं कर सकता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



समझौते की बात-चीत भंग हो जाने पर भारतवर्ष में फिर सरकार के विरुद्ध जोरदार आंदोलन प्रारंभ हुआ। इस बार सरकार पहले से ही तैयार थी और उसने थोड़े ही दिनों में सब नेताओं को, जिनमें मालवीय जी भी सम्मिलित थे, पकड़कर जेल में डाल दिया। पर कुछ समय पश्चात् इंगलैंड की सरकार ने जो नये शासन सुधारों का मसौदा प्रकाशित किया, उसमें प्रांतीय-शासन के बहुत कुछ अधिकार भारतवासियों को दिए गए थे, जिनको स्वीकार करने को कांग्रेस भी तैयार हो गई। पर इसके साथ ही उसमें कई बातें ऐसी भी थीं, जिससे जनता में भेदभाव की वृद्धि होती थी। सबसे अधिक आपत्तिजनक बात गाँधी जी को यह जान पड़ी कि, उसमें अछूतों को हिंदुओं से अलग मानकर पृथक् वोट देने का अधिकार दिया गया था। इसके विरुद्ध गाँधी जी ने यरवदा जेल के भीतर ही २१ दिन का उपवास किया और उनकी दशा बड़ी नाजुक हो गई। तब सरकार उसको बदलने को तैयार हुई और अछूत हिंदुत्व की सीमा में रह गये। इसके पश्चात् गाँधी जी ने अपना मुख्य कार्य अछूतोद्धार ही बना लिया। उन्होंने कहा कि, जब तक हम व्यावहारिक रूप से अछूतों को समानता का दर्जा नहीं देंगे—तब तक उनकी स्थिति नहीं सुधर सकती। इस पर अनेक नेताओं तथा प्रसिद्ध पुरुषों ने सार्वजनिक सफाई का कार्य अपने हाथ से करना शुरू किया और स्वयं गाँधी जी दिल्ली आने पर मेहतरों की बस्ती में ठहरने लगे। उन्होंने समस्त देश में दौरा करके अछूतों की सहायतार्थ बहुत बड़ा कोष भी स्थापित किया और इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति से चंदा देने की अपील की।

इसके बाद सन् १९३८ का समय आया, जब कांग्रेस ने परीक्षा के तौर पर अंग्रेजी सरकार द्वारा दिए गए शासन-सुधारों को स्वीकार कर लिया और डेढ़ वर्ष प्रांतीय शासन-सभाओं का संचालन राष्ट्रीय नेताओं ने किया। यद्यपि यह दोहरी शासन व्यवस्था, जिसमें अंग्रेज गवर्नर को मंत्रिमंडल के किसी भी निर्णय को अस्वीकृत कर देने का अधिकार था, बहुत त्रुटिपूर्ण थी, फिर भी महात्मा जी के आदेशानुसार देश की अनेक समस्याओं के सुलझाने में उसका उपयोग किया गया। जब युद्ध के छिड़ने पर सरकार ने जनता की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सम्मति के विरुद्ध भारत को भी योरोपियन युद्ध में एक भागीदार बना दिया, तब महात्मा जी ने उसे अपने सिद्धांत के विरुद्ध बतलाकर, कांग्रेसी मंत्रिमंडलों को भंग करा दिया।

इस समय आंदोलन को चलते हुए लगभग बीस वर्ष हो चुके थे और जनता के सभी वर्गों में काफी जाग्रति आ गई थी। सरकारी नौकर और फौजी—सिपाही तक देश के प्रति अपने कर्तव्य को कुछ-कुछ अनुभव करने लग गये थे। इसलिए अब महात्मा जी ने निश्चय किया कि सरकार को निश्चित रूप से चेतावनी दे दी जाए कि, या तो भारतवासियों की माँगों को स्वीकार करे अथवा इस देश को छोड़कर चली जाए। यही आंदोलन इतिहास में "क्विट इंडिया" (भारत छोड़ो) के नाम से प्रसिद्ध हुआ और अंत में भारत को स्वतंत्रता दिलाने का माध्यम बना। यह आंदोलन किस प्रकार किया जाए—इस संबंध में सब नेताओं में मतैक्य नहीं था। कांग्रेस के मुसलमान नेता इसके विरुद्ध थे। नेहरू जी और पंत जी आंशिक रूप से पक्ष में थे। उनकी आशंका थी कि, युद्धकाल में ऐसा कदम उठाने से अमेरिका और चीन हमारे विरोधी हो जाएँगे। सरदार पटेल पूर्णरूप से क्रांति का समर्थन कर रहे थे, पर गाँधी जी वर्किंग कमेटी द्वारा प्रस्ताव पास कर दिये जाने पर भी यही चाह रहे थे कि—वायसराय के साथ समझौते की बातें होकर यह समस्या शांतिपूर्वक ही हल हो जाए। इसलिए जब श्री घनश्यामदास बिड़ला ने, जिनके घर में वे बंबई में ठहरे थे, उनसे पूछा कि—"कांग्रेस का अगला कदम क्या होगा ? क्या कमेटी में प्रस्ताव पास होने के बाद आप देश में किसी बड़े आंदोलन का श्रीगणेश करेंगे ?"

गाँधी जी ने कहा—"नहीं, कतई नहीं। हम कोई भी कदम उठाने में जल्दबाजी करना नहीं चाहते। अभी वायसराय से मुझे मिलना है। वे मेरे मित्र हैं और प्रस्ताव की व्याख्या करने में जल्दबाजी से काम नहीं लेंगे। बिना हार्दिक आत्मोत्साह के भारत विदेशी आक्रमण से अपनी रक्षा नहीं कर सकता। वह उत्साह प्रस्तुत युद्ध को लोक-युद्ध के रूप में बदल देने पर ही उत्पन्न हो सकेगा। जब तक भारत अपने देश का स्वामी बन नहीं जाता, तब तक विदेशी आक्रमण का प्रतिकार करने के लिए आवश्यक उत्साह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



उसमें उत्पन्न हो ही नहीं सकता। इसलिए यदि जापानी आक्रमण का प्रतिकार करने के विषय में दोनों की भूमिका समान रही, तो कांग्रेस द्वारा उठाया यह कदम स्नेहपूर्ण माना जा सकता है। मैं वायसराय को अपना यही दृष्टिकोण समझाने का प्रयत्न करूँगा।"

घनश्यामदास—"लेकिन मान लीजिए कि अगर वे अपनी ही बात पर अड़े रहे और टस से मस न हुए तो फिर क्या करेंगे ?"

गाँधी जी—"तब तो फिर किसी न किसी प्रकार के सविनय अवज्ञा आंदोलन का अवलंबन करना ही पड़ेगा। अब तक इस संबंध में मैंने कोई विचार नहीं किया है। इसके लिए न तो मेरे पास कोई योजनाएँ हैं, न पहले से ऐसी योजनाएँ बनाकर तैयार रखने की मेरी आदत ही है। मेरे लिए अगला कदम ही काफी है, और वह है—वायसराय से भेंट करना। यदि उन्हें कायल करने में, मैं असमर्थ रहा, तो हो सकता है कि नमक-सत्याग्रह की तरह का कोई आंदोलन हम आरंभ कर दें। मैं आहिस्ता कदम चलना चाहता हूँ। संकट में फँसे हुए को और अधिक संकट में ढकेलने में कोई मजा नहीं।"

यह थी—महात्मा जी की मानवता। वे सच्चे संत और महामानव थे और किसी भी परिस्थिति में असत्य और हिंसा का आश्रय लेकर विरोधी को परास्त करना नहीं चाहते थे। उनका रास्ता संसार के प्रचलित तरीके से बिल्कुल अलग था। दुनिया में तो यह कहावत प्रचलित है कि—"युद्ध के अवसर पर किसी प्रकार के नियम-पालन की कोई आवश्यकता नहीं।' इसी प्रकार यह भी कहा जाता है कि—"राजनीति में सत्य का कोई स्थान नहीं।" संसार के सभी शासक और राष्ट्र नेता इसी मार्ग पर चल रहे हैं, पर गाँधी जी ने दूसरा ही मार्ग अपनाया, जो प्रत्यक्ष में इसके बिल्कुल विपरीत था। दक्षिण अफ्रीका और भारत में पचास वर्ष तक वे उसी पर चलते रहे। इसके लिए यद्यपि अनेक 'राजनीतिज्ञों" और "नेताओं" ने उनका उपहास भी किया और उनको "पागल" कहा, पर अंत में उन्होंने उसी मार्ग से "भारत की स्वाधीनता" जैसे असंभव दिखाई पड़ने वाले कार्य को संभव करके दिखा दिया। यह कोई साधारण सफलता नहीं थी और इसी से संसार के लाखों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


न्यायप्रिय व्यक्तियों ने उनको "युग पुरुष" स्वीकार कर लिया। यही कारण है कि उनके भारतीय अनुयायी ही नहीं, योरोप और अमेरिका के विद्वान् और अनेक राजनीतिज्ञ भी आरंभ से ही उनकी महत्ता को अनुभव करते आए थे और समय-समय पर अपनी इस भावना को प्रकट भी करते रहे थे। न्यूयार्क (अमेरिका) के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र "नेशन" ने बहुत वर्ष पहले ही महात्मा गाँधी के वास्तविक महत्त्व को समझकर लिखा था—

"वर्तमान युग में जबकि संसार के लोग आधिभौतिक (वैज्ञानिक) चमत्कारों पर ही विशेष जोर दे रहे हैं, भारतवर्ष का यह वीर और तपस्वी नेता अपने सात्त्विक गुणों, स्वार्थ त्याग और आत्म-शक्ति के कारण ही देश और विदेशों में अत्यधिक सम्मान प्राप्त कर रहा है। जिस समय पाश्चात्य सभ्य राष्ट्र अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए युद्ध के अतिरिक्त और कोई मार्ग जानते ही नहीं, उस समय महात्मा गाँधी अपने राष्ट्रीय आंदोलन को "अहिंसात्मक असहयोग" के पथ पर चला रहे हैं। वे कहते हैं कि, भारत को रक्तपात से ही स्वराज्य मिल सकता है, तो हम दूसरों के बजाय अपना ही रक्त क्यों न बहावें ? हिंसा का आश्रय लेना तो स्पष्टतः आत्मा की दुर्बलता का प्रमाण है। वीर पुरुष वही है—जो अपने शत्रु पर भी दया करता है।"

यही कारण है कि, जब महात्मा गाँधी ने एक वर्ष में ही स्वराज्य लेने की घोषणा की और यह भी कहा कि हम दूसरों को न मारकर स्वयं अपने प्राण देकर इस अधिकार को प्राप्त करेंगे, तो समस्त संसार चक्कर में आ गया। उस समय की स्थिति का वर्णन करते हुये "न्यूयार्क ट्रिब्यून" के लंदन स्थित प्रतिनिधि आर्थर एस० डेप ने लिखा था—

"ब्रिटिश सरकार के सम्मुख विविध समस्याएँ हैं और अनेक शत्रुओं का सामना करना है। आयरिश प्रजातंत्र के संचालक डी० वेलेरा असाधारण शत्रु हैं, पर उनकी कार्य प्रणाली में कोई नवीनता नहीं। कुछ वर्ष पहले दक्षिण अफ्रीका के जनरल स्मट्स और बोथा भी उसके कट्टर शत्रु थे, पर उनका संग्राम प्रचलित प्रणाली के आधार पर ही था। लेनिन और ट्राटस्की ने नये विधान चलाए, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



उनमें भी कोई नवीनता नहीं रह गई, किंतु महात्मा गाँधी सबसे भिन्न निकले। वे तो वर्तमान राजनीति और युद्धनीति को पूरी तरह पलट देना चाहते थे। उनका सिद्धांत डी० वेलेरा और लेनिन से एकदम विपरीत है। अंग्रेज लोग इस बात को स्पष्ट रूप में स्वीकार कर रहे हैं कि, वे इसके कारण चक्कर में आ गए हैं।''

संसार भर में पूज्य-भाव से सम्मानित किए जाने वाले महापुरुष टाल्सटाय ने गाँधी जी के दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का हाल सुनकर ही कहा था—''वर्तमानकाल में एकमात्र गाँधी जी ईश्वरीय प्रतिनिधि हैं। मैं उनका नामकरण गाँधी' के स्थान पर 'दीनबंधु' करता हूँ।''

गाँधी जी को राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश कराने वाले माननीय गोखले की सम्मति थी कि—''निस्संदेह गाँधी जी उन्हीं तत्त्वों के बने हैं, जिनसे बड़े-बड़े वीर और शहीद बना करते हैं। वे अपने विलक्षण आत्मबल से साधारण मनुष्यों को भी बहादुर और शहीद बना देते हैं।''

और तो क्या इंगलैंड सरकार के ''भारत सचिव'' मि० मांटेग्यु ने, जिनसे स्वराज्य के लिए गाँधी जी संघर्ष कर रहे थे, उनके संबंध में कहा था—''महात्मा गाँधी का महत्त्व और उद्देश्य अति महान् है। उनका चरित्र निर्मल है और देश-सेवा में उनके निःस्वार्थ-त्याग की तुलना नहीं है।''

मद्रास में ईसाई धर्म के धर्माचार्य (लार्ड बिशप) ने कहा था—''गाँधी जी ईसा मसीह के कहीं अधिक सच्चे प्रतिनिधि हैं।''

पर ऐसे लोकोपकारी और समस्त संसार के हितैषी महापुरुष के साथ भी अंग्रेज सरकार शांति और समझौते के मार्ग को नहीं अपना सकी। कारण यह कि, उस समय इंगलैंड के कर्ता-धर्ता मि० चर्चिल थे, जो गाँधी जी को ''नेकेड फकीर'' (नंगा साधु) के नाम से पुकारते थे और कहते थे कि, जब तक मेरे हाथ में शासन की बागडोर है, तब तक मैं कोई ऐसा काम नहीं कर सकता, जिससे ब्रिटिश साम्राज्य का दिवाला निकल जाय।'' उनका आशय यही था कि, भारतवर्ष तो हमारे लिए ऐसी 'सोने की चिड़िया' है, जिसके आधार पर हम जरूरत पड़ने पर अपना हर तरह का काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


चला लेते हैं। अगर उसे स्वतंत्र कर दिया जाय, तो हमारे साम्राज्य की नींव ही कमजोर पड़ जाएगी और फिर उसको एक दिन गिर जाना ही पड़ेगा।

अंग्रेज शासकों की इस मनोवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि, एक तरफ तो महात्मा जी ६ अगस्त को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में 'क्विट इंडिया' वाला प्रस्ताव पास करके समझौते की बात-चीत करने वायसराय से मिलने का विचार कर रहे थे और दूसरी तरफ सरकारी अधिकारियों ने कमेटी की बैठक होने से पहले ही बंबई में एकत्रित सब नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। महात्मा जी को बिड़ला जी के घर में सुबह चार बजे जगाकर गिरफ्तार किया गया और तुरंत चुपचाप पूना भेजकर "आगा खाँ के महल" में नजर बंद कर दिया गया। आरंभ में कई दिन तक तो लोगों को मालूम भी नहीं पड़ा कि, सब नेताओं को सरकार ने कहाँ रखा है ? धीरे-धीरे गाँधी जी के पूना और अन्य नेताओं के अहमदनगर में होने की खबर प्रकट हुई।

पूना पहुँचने के एक सप्ताह पश्चात् ही एक सबसे बड़ी दुर्घटना यह हुई कि, श्री महादेव देसाई का हृदय गति रुक जाने से देहांत हो गया। वे सन् १९१७ से ही गाँधी जी के साथ थे और उनका सहयोग इतना अधिक और घनिष्ठ था कि, गाँधी जी उनको अपना "दाहिना हाथ" कहते थे। इसके ठीक साल भर बाद उनकी धर्मपत्नी पूज्य कस्तूरबा का देहांत भी उसी कैदखाने के भीतर हो गया। बा भी गाँधी जी की अद्वितीय अनुयायी थी। बा के लिए उन्होंने कहा था—"मेरी पत्नी मेरे अंतर को जिस प्रकार हिलाती है, उस प्रकार दुनिया की कोई दूसरी स्त्री हिला नहीं सकती। उसके लिए ममता के एक अटूट बंधन की भावना दिन-रात मेरे अंतर में जाग्रत् रहती है।"

गाँधी जी और बा का दांपत्य-जीवन कितना उच्च कोटि का और भारत के प्राचीनतम धार्मिक आदर्शों के अनुकूल था, इसकी चर्चा करते हुये श्री बिनोवा ने अपने संस्मरणों में कहा है—"बा और बापू का जो संबंध था, वह अवर्णनीय कहा जाएगा। अपने यहाँ शास्त्रकारों ने पति-पत्नी के विवाह के समय एक विधि बताई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



है—वशिष्ठ और अरुंधती का दर्शन करना। आकाश में ये दो तारे हैं। भारत के अधिकांश ऋषि कुछ समय बाद संन्यास लेकर पत्नियों से पृथक् रहकर लोक-सेवा करते थे, पर वशिष्ठ और अरुंधती सदैव एक साथ रहे। कारण यह कि—वे एक-दूसरे के पूरक थे, बाधक नहीं। (अरुंधती का अर्थ ही यह है, जो मार्ग में रोधन न करे—बाधा खड़ी न करे)। पति ऊँचा चढ़ने वाला हो, तो वह भी उसके साथ ऊँचा चढ़ने को तैयार रहे। बा और बापू ऐसा ही करते थे। बापू जेल में जाते तो बा भी जेल में, बापू सत्याग्रह करते तो बा भी सत्याग्रह करती, वह जो भी करें, वह उसमें उनके साथ रहती। उनके अच्छे कामों में वह रुकावट डालने वाली न थी। इसी से हम उनको वर्तमान समय में वशिष्ठ और अरुंधती का उदाहरण मान सकते हैं।

पर हृदय पर इतनी चोट लगने पर भी वे कर्तव्य-पथ से तनिक भी विचलित नहीं हुए। जैसे ही मई सन् १९४४ में उनको सरकारी कैदखाने से छुटकारा मिला, वे फिर भारतीय स्वतंत्रता के लिए उद्योग करने लग गये। संयोगवश इसके थोड़े ही दिन बाद इंगलैंड में मजदूर-दल की सरकार कायम हो गई और उसने यह देखकर कि—वर्तमान परिस्थिति में भारतवर्ष को अधिक समय तक केवल सैनिक बल द्वारा अधीन नहीं रखा जा सकता, स्वराज्य देने का निश्चय कर लिया। परंतु अंतिम समय में भी भारत की प्रगति के मार्ग में रोड़ा अटकाने के लिए उन्होंने देश को दो भागों—"हिंदुस्तान" और "पाकिस्तान" में बाँट दिया। इसके फल से देश के सभी भागों में इतने भयंकर सांप्रदायिक दंगे हुए, जिनकी पहले किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। स्वतंत्रता मिली, पर गाँधी जी का हिंदू-मुस्लिम एकता का स्वप्न पूर्णतया भंग हो गया। पर फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। पहले वे नोआखाली (पाकिस्तान) गए, फिर बिहार गए। दोनों जगह उन्होंने सांप्रदायिक दावानल को शांत किया। वे अंत में पश्चिमी पाकिस्तान (पंजाब और सिंध) में जाकर भी शांति का संदेश सुनाने की तैयारी कर रहे थे, पर इतने में ही एक आततायी ने दिल्ली की प्रार्थना सभा में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


गोली मारकर उनकी हत्या कर दी, जिससे उनके स्वप्न का भारतवर्ष न जाने किस मार्ग से किसी अन्य दिशा में चल पड़ा।

## गाँधी जी की शोषण रहित राजनीति—

नोआखाली तथा बिहार के दंगों का निरीक्षण करके गाँधी जी के मन को बड़ा धक्का लगा। वे भारत की राजनीति को आदर्श बनाना चाहते थे, पर यहाँ मुसलिम लीग और उसी के जैसी हिंदू सभा आदि ने देश भर में इतना द्वेष और हिंसा का वातावरण उत्पन्न कर दिया था, कि गाँधी जी को अपने मन की बात कहने में भी संकोच लगता था। इसलिए मार्च १९४७ में दिल्ली में होने वाली "एशिया-कान्फ्रेंस" के सम्मुख भाषण करते हुये उन्होंने स्पष्ट कहा—

"मैं नहीं समझता कि भारतवर्ष, जो इस समय गृह-युद्ध की-सी स्थिति में होकर गुजर रहा है, आपको क्या संदेश दे सकता है ?" आप यहाँ की यात्रा करने के पश्चात् अपने साथ क्या अनुभव लेकर जाएँगे ? क्योंकि हम यही नहीं जानते कि, आपस में किस प्रकार शांति रखी जाए ? हम तो इस समय "जंगल के कानून" पर चल रहे हैं, जिसका आशय यह है कि—जो जबर्दस्त हो वह कमजोर को मारकर खा जाय। यह अनुभव ऐसा नहीं है, जिसे मैं आप लोगों से अपने साथ ले जाने को कहूँ। इसलिए मैं चाहूँगा कि—आप उसको यहीं पर गाड़ दें। भारतवर्ष स्वाधीनता के दरवाजे पर खड़ा है, हम अपने स्वामी आप होना चाहते हैं। पर हम कैसे अपने स्वामी आप होंगे, यह मैं नहीं जानता ? इसलिए मैं इतना ही कह सकता हूँ कि, हमको एक मनुष्य की हैसियत से अपना कर्तव्य पालन करते रहना चाहिए और परिणाम को भगवान् के हाथ में छोड़ देना चाहिए। यद्यपि यह कहा जाता है कि—"मनुष्य अपने भाग्य का आप मालिक है," पर यह आंशिक रूप से ही सत्य है। वह अपने भाग्य का निर्माण वहीं तक कर सकता है, जहाँ तक वह 'महाशक्ति', जो हमारे समस्त इरादों और योजनाओं पर शासन करती है, हमको उसकी अनुमति दे।"

जब मिश्र के एक प्रतिनिधि ने प्रश्न किया कि—"क्या आप भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अमेरिका की सहायता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


स्वीकार करेंगे ?'' तो गाँधी जी ने बहुत जोर देकर कहा कि—"मैं तो भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए विदेशी सहायता की कल्पना भी नहीं कर सकता। मैं यह नहीं जानता कि—आगे चलकर स्वतंत्र भारत की नीति क्या रहेगी ? पर मेरा विश्वास है कि—एक दिन ऐसा आएगा, जब सारा संसार शांति की खोज में भारत में आएगा और भारत तथा एशिया संसार के लिए प्रकाश स्तंभ की तरह हो जाएँगे। मैं नहीं जानता कि, जो भयंकर दावानल हमको चारों तरफ से घेर रहा है, मैं उससे बच सकूँगा या नहीं, पर तुम लोग जो अभी नवयुवक हो, उसे देख सकोगे ऐसी आशा है।''

एक योरोपियन प्रतिनिधि ने पूछा कि, स्वाधीन भारत की आर्थिक नीति क्या होगी ? गाँधी जी ने कहा कि—"हम लोग कभी दूसरे देश वालों का शोषण करके मालदार बनना नहीं चाहेंगे, क्योंकि हम स्वयं उसके दुष्परिणामों का अनुभव कर चुके हैं। उदाहरण के लिए हम अपने कारखानों में बनाए कपड़ों को किसी पड़ोसी देश में इस दृष्टिकोण से भेज सकते हैं कि—वहाँ कपड़े की कमी न हो, पर यह कार्य मित्रता के रूप में होगा, किसी पिछड़े हुए देश को लूटने की नीयत से न होगा। मैं चाहता हूँ कि, पश्चिमी देश भी इस दृष्टिकोण को अपनाएँ कि, भारत उनके शोषण करने योग्य नहीं है, वरन् उनकी मित्रतापूर्ण सहायता का पात्र है। पर भारतवर्ष में जिस ईसाई धर्म का प्रवेश हुआ, उसमें दोनों तरह की भावनाएँ सम्मिलित थीं। अगर यहाँ ईसाई मिशनरी ही इस भाव से आते कि—वे यहाँ के गरीब गाँव वालों की सहायता करें और किसी तरह की स्वार्थपूर्ण राजनीति से संबंध न रखें, तो वे यहाँ के निवासियों की स्थायी कृतज्ञता प्राप्त करते और ईसा मसीह के सच्चे, शिष्य भी सिद्ध हो सकते।''

योरोपियन प्रतिनिधियों ने बड़े विनीत भाव से कहा—"आपसे भेंट होने को हम अपना बड़ा सौभाग्य समझते हैं। आप जब बोलते हैं, तो जान पड़ता है कि वे शब्द "बाइबिल'' में से ही चले आ रहे हैं। हम अनुभव करते हैं कि, अभी तक भारत के प्रति हमारा व्यवहार दयाहीनता का रहा है।'' अन्य देशों के प्रतिनिधि भी गाँधी जी के व्यवहार से मुग्ध हो गए। एक ने कहा—"अब तक हमने जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


कुछ देखा, सुना है—यह पुरुष उस सबसे भिन्न है।'' दूसरे ने कहा कि—''हमारी भारत-यात्रा'' अधूरी ही रह जाती, यदि हम इनसे न मिले होते।'' एक महिला प्रतिनिधि ने कहा कि—''ऐसे नेता को पाकर आप निःसंदेह सौभाग्यशाली हैं। अगर हमको भी ऐसा नेता मिल जाता, तो हमारे यहाँ इतना खून-खराबा न होता।''

## भारतवर्ष के लिए आध्यात्मिक समाजवाद—

कैपिटलिज्म (पूँजीवाद) और समाजवाद की मीमांसा भी गाँधी जी ने बड़े न्याययुक्त ढंग से की है। जब किसी ने गाँधी जी से कहा कि—सरकार देश के औद्योगिक विकास और कच्चे माल के प्रयोग करने के विषय में बहुत बड़ी योजना चालू कर रही है, तो गाँधी जी ने उत्तर दिया कि—''कोई भी योजना जो देश के कच्चे माल का परिमाण बढ़ाने का प्रयत्न करती है, पर मानव-शक्ति का उपयोग भुला देती है, वह कभी सुखी और समृद्ध समाज का निर्माण नहीं कर सकती। पश्चिमी देशों में यही हुआ है कि उन्होंने संसार की मानव-शक्ति का ख्याल तो छोड़ दिया और समस्त साधन थोड़े-से लोगों को सौंप दिए। इससे कुछ व्यक्ति तो शक्ति तथा धन की दृष्टि से बहुत बड़े बन गए और शेष असंख्य लोक कष्टों में पड़े रह गए। ऐसा औद्योगीकरण गरीबों के लिए कभी लाभजनक नहीं हो सकता, और शेष संसार के लिए भी वह एक खतरा ही सिद्ध होता है। अगर भारतवर्ष को ऐसे खतरे से बचना है, तो उसको पश्चिमी देशों से उन्हीं बातों को लेना चाहिए, जो श्रेष्ठ हों और उसके लिए हितकारी हों। पश्चिम वालों की आकर्षक, किंतु नाशकारी आर्थिक नीति से तो उसे बिल्कुल दूर ही रहना चाहिए। भारत की जैसी स्थिति है—उसमें तो ऐसी योजना बनाई जानी चाहिए, जिससे सब मनुष्य काम-धंधे से लग सकें। हमको सब कच्चा माल गाँवों में भेज देना चाहिए और वहीं पर उसके द्वारा विविध पदार्थों का निर्माण किया जाना चाहिए। यह नहीं होना चाहिए कि कच्चा माल गाँवों से बाहर भेज दिया जाय और उसके द्वारा कारखानों में बना हुआ माल बहुत अधिक दाम देकर खरीदा जाए।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


आगे चलकर उन्होंने स्वदेशी की व्याख्या करते हुये कहा कि—"स्वदेशी का आशय है कि हम नजदीक रहने वाले की पहले सेवा करें, बनिस्बत दूर रहने वाले के। इस कारण स्वदेशी का अनुयायी अपने समीप के क्षेत्र की देखभाल करता है और अपने पड़ोसियों की सहायता करने का प्रयत्न करता रहता है और इसे अपना प्रथम कर्तव्य मानता है। वह दूर के दृश्यों से आकर्षित होकर संसार के दूसरे कोने तक सेवा करने को भागा हुआ नहीं जाता। यह स्वदेशी का सिद्धांत जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू किया जा सकता है। उदाहरणार्थ धार्मिक क्षेत्र में इस सिद्धांत के अनुसार उसी धर्म को अपनाना उचित है, जिसमें हम उत्पन्न हुए हैं। अन्य सब धर्मों की भी अच्छी बातों को उसमें शामिल करना चाहिए। आर्थिक क्षेत्र में इसके अनुसार हमें उस कारीगर से काम कराना चाहिए, जो हमारे नजदीक रहता है। अगर वह होशियार न हो, तो उसे होशियारी प्राप्त करने में हमको मदद करनी चाहिए। यह करना कभी उचित न होगा कि, दूर से किसी चतुर कारीगर को या सस्ती दर से काम करने वाले को बुला लेवें और स्थानीय मजदूर को भूखों मरने के लिए छोड़ दें। स्वदेशी की ऐसी भावना 'सर्वोदय' के अंतर्गत आती है और इसी को 'सर्वभूत हितेरता' (सबके लिए कल्याणकारी) कहा जा सकता है।"

यदि विचार किया जाए तो प्रतीत होता है कि, गाँधी जी ने समाज का जो चित्र खींचा था, उसे 'वर्णाश्रम' धर्म का आधुनिक रूप कहा जा सकता है, जो प्राचीन भारत में प्रचलित था और आज भी "जाति रहित, श्रेणी हीन और राज्य रहित समाज" के रूप में जिसका प्रचार किया जा रहा है। साम्यवादी कहते हैं—"हर एक को उसकी आवश्यकतानुसार दिया जाए और हर एक से उसकी योग्यतानुसार काम कराना चाहिए।" वे यह भी कहते हैं कि—"सब प्रत्येक के लिए और प्रत्येक सब के लिए।" पर इन दोनों प्रणालियों में एक मुख्य भेद यह है कि—वर्णाश्रम धर्म में किसी व्यक्ति के कर्तव्यों का आशय यह नहीं होता कि हम अपने या दूसरों के लिए पृथ्वी पर स्वर्गीय सुख उपस्थित करना चाहते हैं। वरन् उसके अनुसार हम समाज की जो निःस्वार्थ सेवा करें, उसका उद्देश्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


अपने भीतर एकत्रित अनुचित अहंकार को नष्ट करके अपने सच्चे स्वरूप को अनुभव कर लेना है। पर मार्क्स ने जिस समाज का चित्र खींचा है, उसका संबंध केवल मनुष्यों के भौतिक देह और उनकी आवश्यकताओं से है। भगवान् का उसमें कोई स्थान नहीं रखा गया है। इस कारण उनको अपने लक्ष्य के प्राप्त करने में हिंसा अथवा अनुचित उपायों का अवलंबन करने में कोई संकोच नहीं होता। पर गाँधी जी के सिद्धांत के अनुसार चलने से मनुष्य अपने को समस्त सृष्टि से अभिन्न समझने लगता है और स्वाधीनता, समानता तथा भ्रातृभाव की स्थापना के लिए केवल सत्य और अहिंसा जैसे सात्त्विक उपायों से ही काम लेता है।

गाँधी जी ने अपने इस सामाजिक आदर्श को "रामराज्य" का नाम दिया था, पर साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि—"रामराज्य" का अर्थ हिंदुओं का राज्य नहीं समझ लेना चाहिए। 'राम' 'खुदा' अथवा 'गाड' में भाषाभेद के अतिरिक्त कोई अंतर नहीं है। इस प्रकार का राज्य केवल समस्त भारतीय जनता के लिए ही कल्याणकारी न होगा, वरन् उसमें समस्त संसार के हित का भी समावेश हो जायेगा।

## गाँधी जी का धर्म समन्वय—

गाँधी जी को भारतवर्ष तथा अन्य देशों के भी प्रसिद्ध विद्वानों ने महान् धार्मिक व्यक्ति माना है। पर उनका धर्म लकीर के फकीर वालों की तरह या कट्टरता का दम भरने वालों की तरह संकीर्ण न था। वे धर्म के मूल तत्त्व को समझते थे और उसके अनुसार ही सदैव आचरण करते थे। ऐसे धर्म-पालन के लिए उन्होंने एक नहीं अनेक बार अपने प्राणों का भी बलिदान करने का निश्चय कर लिया। यही कारण था कि—हिंदू ही नहीं, ईसाई और मुसलमान भी उनको "धार्मिक" समझते थे और गाँधी जी भी हर एक धर्म का सम्मान करते और उसकी रक्षा के लिए सचेष्ट रहते थे। ऐसे मामलों में वे किसी के खुश या नाखुश होने का ख्याल नहीं करते थे, वरन् जो कुछ सच्ची बात जान पड़ती वही कहते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


नोआखाली के देवीपुर गाँव में वहाँ के पीर साहब गाँधी जी से मिलने आए। आस-पास के स्थानों में उनको बहुत बड़ा धार्मिक व्यक्ति माना जाता था। उन्होंने हिंदुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बनाने का समर्थन इस आधार पर किया कि—"इसी प्रकार उनकी प्राण-रक्षा हो सकती थी। उनको बचाने के लिए यह हमारी एक चाल थी।" पर गाँधी जी इससे सहमत न हुए और कहने लगे कि—"किसी की जान बचाने से क्या लाभ, यदि बदले में उसका धर्म ले लिया गया ? इससे तो अच्छा यह था कि, पीर साहब यह उपदेश देते कि—वे अपने धर्म पर कायम रहें, चाहे उनके प्राण भी चले जाएँ।" पर पीर साहब इसी पर अड़े रहे कि, किसी की जान बचाने के लिए अगर झूठ से काम लिया जाय, तो उसमें कोई बुराई नहीं है। इससे गाँधी जी के हृदय को बड़ी चोट पहुँची और वे कहने लगे कि—"अगर मुझे कभी खुदा के सामने जाने का अवसर मिल सका, तो उससे पूछूँगा कि उसने ऐसे व्यक्ति को पीर (धर्माध्यक्ष) क्यों बना दिया ?"

अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य—इनको हिंदू धर्म के पंच महाव्रत माना गया है, जिन पर आचरण करना प्रत्येक आत्मज्ञानी के लिए आवश्यक है। इन्हीं पाँच स्तंभों पर गाँधी जी का समस्त जीवन और उनका दर्शन टिका हुआ था। पर वह इनकी उस व्याख्या को नहीं मानते थे, जो कि पुरातन-पंथी किया करते हैं, वरन् वे इन सब पर एक बुद्धिवादी वैज्ञानिक की दृष्टि से विचार करते थे। वे केवल शास्त्रों में लिखे शब्दों को ठीक नहीं मान लेते थे, वरन् उनके वास्तविक तात्पर्य पर ध्यान देते थे और उसके अनुसार ऐसे कार्य भी कर डालते थे, जिससे पुरातनवादी भौचक्के रह जाते थे। उदाहरण के लिए उन्होंने एक कष्ट से तड़पते हुए असाध्य रोगी बछड़ा को जहर का इंजेक्शन देकर मरवा दिया। जब आवारा कुत्तों के पागल होकर लोगों के काटने का भय हुआ अथवा चूहों से प्लेग के फैलने की संभावना जान पड़ी, तो उनको नष्ट करने की आज्ञा दे दी और इसमें उन्हें अहिंसा के विरुद्ध कोई बात न जान पड़ी। उनका दृष्टिकोण सदा एक क्रांतिकारी जैसा रहता था और उसी से प्रेरित होकर उन्होंने आर्थिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


राजनीतिक, सामाजिक और धर्म के विषय में भी अनेक पुराने विचारों का विरोध किया था। वे हर एक विषय को पूरी जाँच-पड़ताल और परीक्षा के बाद ही मानना चाहते थे। ब्रह्मचर्य के विषय में भी उन्होंने ऐसा ही दृष्टिकोण अपनाया था।

गाँधी जी पाँचों महाव्रतों का आशय एक ही सत्य-सिद्धांत को प्रतिपादित करना मानते थे, जो उनकी मान्यता के अनुसार यह था कि—"प्रेम का नियम जिसके प्रभाव से मानव-मन की समस्त कामनाओं और संपदाओं की अभिलाषाएँ शांत हो जाती हैं।"

ब्रह्मचर्य का शाब्दिक अर्थ तो ऐसा जीवन क्रम अपनाना है, जिसमें ब्रह्म की खोज और प्राप्ति हो सके। पर पाँच महाव्रतों ने रूप में उसकी जो व्याख्या की गई है, उसमें यही कहा गया है कि, ब्रह्मचारी स्त्रियों के संसर्ग से सर्वथा दूर रहे। शास्त्र में कहा गया है कि—"ब्रह्मचारी को स्त्रियों, मादा पशुओं और हिजड़ों से दूर रहना चाहिए। स्त्रियों को अकेले में पढ़ाना भी नहीं चाहिए। उसे स्त्री के किसी भी अंग पर दृष्टि नहीं डालनी चाहिए और उसे कभी स्त्रियों के साथ एक आसन पर बैठना भी नहीं चाहिए, आदि।" गाँधी जी ने पाँचों व्रतों की इस शास्त्रीय व्याख्या को दक्षिण अफ्रीका में ही पढ़ा था। पर वे इसको इस कारण मान्यता न दे सके, क्योंकि उन्होंने देखा कि कितने ही योरोपियन ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, पर स्त्रियों से दूर रहने की बात को न तो वे जानते हैं और न उसे महत्त्व देते हैं।

गाँधी जी भी हर तरह से स्त्रियों से दूर रहकर, उनका ख्याल भी दिल में न उठे ऐसा वातावरण बनाकर, ब्रह्मचर्य पालन करने को कुछ भी महत्त्व नहीं देते थे। वर्तमान युग की सामाजिक व्यवस्था में तो यह संभव भी नहीं है और मूर्खतापूर्ण भी समझा जाएगा। गाँधी जी तो कहते थे कि—मनुष्य स्त्रियों में रहे, उनके कार्यों में उसी प्रकार सहयोग करता रहे जैसे पुरुषों से करता है, और फिर भी किसी प्रकार की वासना या दुर्भावना उसके मन से न उठे, वही सच्चा ब्रह्मचारी है। नोआखाली में ठक्कर बापा से इस विषय में चर्चा करते हुए उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि, मेरे पास सब जातियों की जो हजारों स्त्रियाँ आती हैं, अगर उनमें से किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


के साथ मुझे एक ही शैय्या पर सोने का अवसर आ जाय और उस समय भी मेरे मन में किसी तरह के विकार का लेश मात्र भी न हो, तभी मुझे सच्चा ब्रह्मचारी कहा जा सकता है।"

## कालजयी महात्मा गाँधी—

जीवन के अंतिम दिनों में अपने अहिंसा-सिद्धांत की अवहेलना होते देखकर गाँधी जी को बहुत कष्ट होने लगा था। उन्होंने कई बार यह भावना प्रकट की कि, एक ओर तो हम संसार को अहिंसक बनने—युद्ध को त्याग देने का संदेश देते रहते हैं और दूसरी तरफ हमारी आँखों के आगे ही, भारतवासी आपस में मनमानी खून-खराबी कर रहे हैं, स्त्रियों की बेइज्जती की जा रही है, धार्मिक स्थानों को नष्ट-भ्रष्ट किया जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में मेरे जीवित रहने से क्या लाभ ? वे प्रायः कहा करते थे कि—मैं पहले १२० वर्ष तक की आयु तक जीने की बात कहा करता था, पर भारतवर्ष की मौजूदा फूट और वैमनस्य को देखकर तो मैं एक दिन भी जीवित रहना नहीं चाहता। उनकी यह भावना इतनी दृढ़ हो गई कि—उन्होंने जिस तरह चाहा था, उसी प्रकार उनके जीवन का अंत हो गया। इस दृष्टि से निश्चय ही वे एक कालजयी पुरुष थे।

यों सामान्य रीति से देखने पर तो गाँधी जी की हत्या एक बहुत बड़ा अमानुषिक कार्य जान पड़ती थी और उस अवसर पर भारत ही नहीं समस्त संसार ने इसकी एक स्वर से निंदा की थी। "अहिंसा के अवतार" का इस प्रकार की पाशविक हिंसा का शिकार होने की घटना ने प्रत्येक मनुष्य को स्तंभित कर दिया। पर इसमें भी कुछ संदेह नहीं, कि देश की बदली हुई परिस्थिति और हिंसा का घोर तांडव होता देख कर उस मानवतावादी महात्मा का हृदय चूर-चूर हो गया था। वे जीवित तो थे और अपनी जान की बाजी लगाकर हिंसापूर्ण वातावरण के सुधार की चेष्टा भी कर रहे थे, पर वे यह भी समझ रहे थे कि—उनकी आंशिक सफलता भी क्षणस्थायी और दिखावटी ही है। जातीय विद्वेष और हिंसा-भावना ने अधिकांश लोगों के हृदयों में ऐसा घर कर लिया था कि वर्षों में भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


उसका निकल सकना असंभव जान पड़ता था। गाँधी जी ने इस विषाक्त वातावरण को बदलने के लिए उपवास करने का निश्चय किया। उन्होंने कहा—"मैं देखता हूँ कि लोग मेरे मुँह पर एक बात कहते हैं और होती है दूसरी बात। फलतः मैं भरोसा कर लेता हूँ और जनता मुझ पर भरोसा करती है। राजनीतिज्ञों के बीच के गंभीर मतभेदों का दंड आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। कांग्रेस के भीतर भारी गंदगी बढ़ती जा रही है। इसके सुधार का एकमात्र उपाय मेरे सामने अनशन ही है। इससे अगर हिंदुस्तान की हालत सुधर जाय, तो उसके साथ बाकी सब सुधर जाएगा।"

महात्मा जी ने १३ जनवरी से १८ जनवरी तक छह दिन तक अनशन किया और उसके प्रभाव से हिंदू, सिख, मुसलमान सभी संप्रदायों के नेताओं पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। कोई नहीं चाहता था कि, महात्मा जी की मृत्यु का कलंक हमारे ऊपर आवे। इसलिए किसी ने पूरे मन से, किसी ने आधे मन से और किसी ने बाह्य रूप से ही उनके सामने सांप्रदायिक विद्वेष तथा हिंसा के वातावरण को शांत करने की लिखित प्रतिज्ञा की। इस पर उन्होंने अनशन तोड़ दिया और अपनी समस्त शक्ति लगाकर देश में शांति स्थापित करने की चेष्टा करने लगे। भारतवर्ष में अल्पसंख्यक मुसलमानों की रक्षा की समस्या ने उनका ध्यान बहुत अधिक आकर्षित किया और अपनी दैनिक प्रार्थना सभा में वे निरंतर इसकी चर्चा करते रहते थे। पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, बाबू राजेंद्रप्रसाद आदि जितने भी प्रमुख सरकारी मंत्री उनके पास आते थे, उन पर भी वे इसी बात के लिए जोर देते रहते थे। उनके प्रयत्नों का फल भी प्राप्त हुआ और दिल्ली में उसके बाद झगड़े की कोई घटना नहीं हुई। पर जिन शरणार्थियों ने पाकिस्तान में घोर कष्ट सहन किए थे, जिनके परिवार वाले वहाँ मारे गए थे, घर-बार के छूट जाने से जो यहाँ आकर सड़कों और धर्मशालाओं में पड़े थे, वे सब उनसे बहुत असंतुष्ट हुये। २० जनवरी को ही मदनलाल नाम के एक युवक ने गाँधी जी की प्रार्थना सभा में एक बम फेंका, जो गलती से कुछ दूर पड़ा। उससे वहाँ भगदड़ तो अवश्य मच गई पर किसी के जान-माल का नुकसान नहीं हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



पर इस घटना से गाँधी जी ने अच्छी तरह समझ लिया कि, यद्यपि हिंसा की अग्नि ऊपर से कुछ दब गई है, पर भीतर ही भीतर वह धधक रही है। अब सरकारी अधिकारियों और अन्य नेताओं के दबाव से हिंसा में विश्वास रखने वाले मुसलमानों के खिलाफ खुलकर कोई कार्यवाही नहीं कर सकते, इस कारण वे मुझे अपना दुश्मन समझकर अपने रास्ते से हटाने का प्रयत्न अवश्य करेंगे, पर वे तो पहले ही कितनी ही बार मृत्यु को चुनौती दे चुके थे, इसलिए इस परिस्थिति से डरने की बजाय उल्टा प्रसन्न हो रहे थे। देश का मौजूदा वातावरण उनको अपने सिद्धांतों के विपरीत जान पड़ रहा था और उनकी आत्मा कह रही थी कि, अब इसका सुधार जल्दी नहीं हो सकता। बड़े-बड़े कांग्रेस मैनों की त्यागवृत्ति और सेवा-भावना अब ढीली पड़ने लग गई थी और देशोत्थान के बजाय उनका लक्ष्य बड़ा पद प्राप्त करना और हर तरह से लाभ उठाना रह गया था। एकाध बहुत बड़े कांग्रेसी नेता की रिश्वत लेने की बात भी उनके जानने में आई। उधर पाकिस्तान में हिंदुओं पर मनमाने जुल्म हो रहे थे। सैकड़ों व्यक्ति, काटे जा रहे थे, धर्म-स्थानों पर आक्रमण किये जा रहे थे, बहू-बेटियों की इज्जत खराब की जा रही थी। इन खबरों से तैश में आकर शरणार्थी उनसे कहते थे कि—आपने यहाँ तो मुसलमानों की रक्षा की, अब पाकिस्तान जाकर हिंदुओं को तो बचाइए। सीमाप्रांत से आने वाले कुछ शरणार्थियों ने स्पष्ट कहा कि—"हमको आपकी जरूरत नहीं है। आप हमारे बीच में क्यों दखल देते हैं ? आप हिमालय में जाकर एकांत में बैठिए।"

इन घटनाओं को देखकर उनकी अंतरात्मा अत्यंत दुःखी हो रही थी और उन्होंने बातचीत करते हुए एक-दो बार कहा भी—"अब मेरी कौन सुनेगा ?" अपने जीवन के अंतिम दस दिनों में उन्होंने अपने आत्म-दान का बिल्कुल निश्चय कर लिया था और वे प्रतिदिन किसी न किसी से बातचीत करते हुए इस भावना को प्रकट कर ही देते थे। एक दिन जब उनकी सेवा करने वाली मनु बहन ने कहा—"बापू ! आज आप आराम कीजिए न ?" तो उन्होंने उत्तर दिया—"अब तो मुझे भी लग रहा है कि आराम का समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


नजदीक आता ही जा रहा है। फिर तो तू झकझोर कर जगाएगी तब भी मैं नहीं जागूँगा।" बम फटने के बाद दूसरे दिन प्रार्थना सभा में कहा—"बम के फटने पर भी मैंने जो शांति रखी, बहुत-से लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। पर सच्ची बहादुरी तो तभी कही जाएगी, जब मेरे सामने ही बम फटे और मैं न डरूँ, तथा उस समय भी हँसता हुआ ही आप से विदा लूँ। मैं इसी सौभाग्य की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" फिर एक दिन बाद किसी परिचित को पत्र में लिखा—"२० तारीख को तो मुझे मरना ही था, लेकिन रामजी को अभी मुझ से काम लेना होगा, इससे बचा लिया। किंतु इसी तरह हँसते-हँसते मर सकूँ, तो मुझ पर ईश्वर की अपार कृपा है मानी जाएगी। क्या मैं ऐसी भव्य कृपा का पात्र बन सकूँगा ? ऐसी मृत्यु का पात्र बनने का प्रयत्न तो मैं कर ही रहा हूँ।"

२१ ता० को भी एक मुसलमान मित्र के पत्र का उत्तर देते हुए लिखा था—"मैं तो राम दास हूँ। उनकी मर्जी होगी, वहाँ तक उनका काम करूँगा। अपने जीवन से सत्य-अहिंसा की सफलता सिद्ध कर सकूँ, ऐसी मौत खुदा देगा, तभी कामयाब हो सकता हूँ।" २८ ता० को जब एक अंग्रेजी बोलने वाली उच्च पदस्थ महिला ने पूछा—कि "अब तो आपकी प्रार्थना-सभा में लोग विघ्न नहीं डालते ?" तो उन्होंने कहा—"No. But does that question mean that you are worrying about me ? If I am to die by the bullet of a mad man. I must do so smiling. God must be in my heart and on my lips."

अर्थात्—"नहीं। पर क्या तुम्हारे प्रश्न से यह प्रकट नहीं होता कि—तुम मेरे लिए चिंतित हो। अगर मुझे किसी पागल आदमी की गोली से मरना पड़े, तो मुझे हँसते हुए ही मरना चाहिए। मेरे हृदय में और ओंठों पर केवल भगवान् का नाम हो।

मृत्यु से पहली-पहली रात को जब वे विश्राम के लिए बिस्तर पर लेट गए थे और दो-एक अनुयायी उनके थके हुये अंगों को मल रहे थे, उन्होंने कहा—"अगर मैं किसी बीमारी से—सामान्य फोड़े से भी मरीज होकर मरूँ, तो तुम्हारा यह कर्तव्य है कि—संसार को बतला दो कि, गाँधी जो सच्चे ईश्वर भक्त नहीं थे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


चाहे इससे लोग तुमसे नाराज भी क्यों न हो जाएँ ? अगर तुम ऐसा करोगे तो मेरी आत्मा को शांति मिलेगी। साथ ही यह लिखकर रख लो कि अगर कोई गोली चलाकर मेरे जीवन का अंत कर दे और मैं उस आघात को बिना हाय-तोबा किए सह लूँ, तब भी राम नाम लेता हुआ ही प्राण त्यागूँ, तो यह समझना कि मैं जो दावा करता था वह सच है।

३० जनवरी के दोपहर के समय जब देहली के कुछ मौलाना उनसे मिलने आए और पूछा कि, क्या आप सेवाग्राम जा रहे हैं ? गाँधी जी ने कहा—"वहाँ जाना बहुत जरूरी है, नहीं तो मेरा बहुत-सा कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो जाएगा।" मौलाना ने पूछा—"क्या आप १४ फरवरी तक वापस आ जाएँगे ?" गाँधीजी ने कहा—"मैं १४ तारीख तक लौट आने की पूरी आशा रखता हूँ, पर भगवान् को कुछ और ही मंजूर हो, तो दूसरी बात है। अभी तो मुझे यह भी निश्चय नहीं है कि, मैं परसों भी यहाँ से रवाना हो सकूँगा या नहीं ? यह सब भगवान् के ही हाथ में है।"

उन दिनों एक बहुत बड़ी समस्या यह उठ खड़ी हुई थी कि, सरदार पटेल तथा पं० जवाहर लाल नेहरू में शासन-कार्यों के विषय में मतभेद उत्पन्न हो गया था और कितने ही लोग अपने स्वार्थ के लिए उसे बढ़ाने की कोशिश भी करते रहते थे। उसी दिन एक कार्यकर्ता ने गाँधी जी को लंदन के "टाइम्स" अखबार में प्रकाशित एक लेख दिखलाया था, जिसमें सरदार पटेल को "संप्रदायवादी" बतलाकर नेहरू जी की प्रशंसा की गई थी। गाँधी जी को इस विषय में बड़ी चिंता थी और उसी दिन शाम के ४ बजे सरदार पटेल के आने पर उनसे कहा—"यद्यपि पहले मैंने यह विचार प्रकट किया था कि, सरदार और नेहरू में से कोई एक मंत्रिमंडल से हट जाय। पर उसके बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि, उसमें दोनों का ही रहना अनिवार्य है। अगर यह व्यवस्था भंग हुई, तो बड़ी हानि होगी।" गाँधी जी के इस अंतिम आदेश का सरदार पटेल ने अंत तक पालन किया और सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करते रहे कि—"जवाहर लाल हमारा नेता है, क्योंकि गाँधी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



जी उन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर गये हैं। हमें बापू के आदेश का अक्षरशः पालन करना चाहिए।"

पाँच बजे सरदार पटेल से बातचीत समाप्त करके वे उठे और अपने कमरे से निकलकर प्रार्थना सभा की तरफ जाने लगे, तो बीच में ही एक साथी ने कहा—"काठियावाड़ से दो कार्यकर्ता आए हैं और मिलने का समय पूछ रहे हैं ? गाँधीजी ने कहा—"उनसे कह देना कि वे प्रार्थना के बाद आयें। तब मैं उनसे बात कर सकूँगा, अगर जिंदा रहा तो।"

इस कथन के एक या दो मिनट बाद ही वे प्रार्थना-स्थल में पहुँच गए। पर मंच तक पहुँचने से पूर्व ही हत्याकारी ने उठकर उनको रोका और तीन गोलियाँ चलाकर उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी। गोली लगने के बाद गाँधी जी के मुख से गिरते-गिरते केवल एक बार "राम-राम" शब्द निकला।

मरने के बाद भी गाँधी जी का प्रभाव कितना अधिक था, यह निम्न घटना से प्रकट होता है। भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड माउंटबेटन उसी दिन मद्रास से लौटकर आये थे। जैसे ही उन्होंने यह समाचार पाया, वे तुरंत बिरला हाउस पहुँचे। उस समय वहाँ इतनी अधिक भीड़ हो गई थी कि उनको भीतर घुस सकना कठिन हो गया। उनके चारों तरफ एक समूह एकत्रित हो गया और किसी गुस्से में भरे नवयुवक ने चिल्लाकर कहा—"गाँधी जी की हत्या एक मुसलमान ने की है।"

लार्ड माउंटबेटन पक्के फौजी आदमी थे। परिस्थिति को देखकर तुरंत बोले—"तुम मूर्ख हो। हर एक जानता है कि वह हिंदू है।" इस उत्तर को सुनकर आस-पास की भीड़ के लोग कुछ शांत हो गए। माउंटबेटन के साथ आने वाले एक अफसर ने पूछा—"आपको कैसे मालूम हुआ कि वह हिंदू है ?" माउंटबेटन ने कहा—"वह हिंदू ही होना चाहिए, क्योंकि अगर वह मुसलमान होगा तो सारा देश चौपट हो जाएगा।" वे जानते थे कि अगर मारने वाला मुसलमान हो, तो भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक सांप्रदायिक दंगों की ऐसी आग भड़केगी कि उसे बुझा सकना असंभव हो जाएगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



दूसरा काम उन्होंने यह किया कि भीतर पहुँचते ही नेहरू जी और सरदार पटेल को अलग कमरे में बुलाया और कहा—"गाँधी जी ने मुझसे सबसे अंत में यही आग्रह किया था कि—जहाँ तक मेरी शक्ति हो, वहाँ तक आप दोनों को साथ रखूँ और दोनों में मित्रता बनाये रखने की चेष्टा करूँ।" इस पर इस महान् शोक के अवसर पर भी वे एक-दूसरे से गले मिले और वायसराय के कथनानुसार दोनों ने रात को रेडियो पर पुष्टि कर दी।

## महात्मा गाँधी का दैवी व्यक्तित्त्व—

संसार में गाँधी जी के देहांत होने का जितना अधिक शोक मनाया गया और सब तरह के लोगों ने इसको जिस प्रकार अपनी व्यक्तिगत हानि मानी, वैसा संसार में शायद ही पहले कभी हुआ हो। भारतवर्ष में कई आदमी यह खबर सुनकर मर गये, कुछ ने आत्महत्या की चेष्टा की, क्योंकि उन्होंने अनुभव किया कि अब संसार में उनके लिए कुछ शेष नहीं रहा। संसार भर से सहानुभूति और संवेदना के संदेश आये। इंगलैंड के राजा और रानी, अमेरिका के प्रेसीडेंट ट्रूमैन, रोम के पोप पालस, फ्रांस के प्रेसीडेंट, इंगलैंड के आर्क बिशप कैंटरबरी, तिब्बत के दलाईलामा जैसे प्रमुख शासकों तथा धर्माध्यक्षों ने हजारों की संख्या में संदेश भेजे। राष्ट्र-संघ की सीक्योरिटी कौंसिल ने यह खबर पाते ही अपना अधिवेशन स्थगित कर दिया और गाँधी जी को "सबसे अधिक गरीबों तथा गिरे हुओं को मित्र" के नाम से याद किया। राष्ट्र-संघ में इगलैंड के प्रतिनिधि फिलिप नोलब्रेकर ने कहा कि—"गाँधी जी की बहुत बड़ी सफलताएँ तो आगे चलकर दिखाई पड़ेंगी।" उसी समय "यूनाइटेड नेशन्स" (राष्ट्र-संघ) का झंडा भी झुका दिया गया।

पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा—"बड़े और प्रसिद्ध लोगों के स्मारक धातु की मूर्तियों के रूप में बनाए जाते हैं और उनमें संगमरमर लगाया जाता है, पर इस दैवीशक्ति-संपन्न का स्मारक करोड़ों लोगों के हृदय में बना है और वह असंख्य वर्षों तक बना रहेगा।" अमेरिका की प्रसिद्ध लेखिका पर्लबक ने, जिसे नोबल पुरस्कार मिला था, कहा—'महात्मा गाँधी की मृत्यु ईसा के क्रूस पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


चढ़ाये जाने के तुल्य दूसरा बलिदान है। 'अमेरिका के द्वितीय महासमर को जीतने वाले प्रसिद्ध सेनापति डगलस मैकआर्थर ने कहा—"अगर मानव सभ्यता को जीवित रहना है, तो हमको एक दिन गाँधी जी का यह सिद्धांत मानना ही पड़ेगा कि किसी झगड़े के निपटारे के लिए सामूहिक शक्ति (सैनिक शक्ति) का प्रयोग गलत है। इस प्रकार की नीति में नाश का बीज अपने भीतर ही निहित रहता है।" फ्रांस के प्रसिद्ध नेता लियोन ब्लम ने लिखा कि—"मैंने कभी गाँधी जी को देखा नहीं, मैं उनकी भाषा नहीं जानता, कभी उनके देश में मैंने कदम नहीं रखा, फिर भी मुझे ऐसा शोक हो रहा है, जैसा किसी निकटवर्ती प्रिय संबंधी की मृत्यु से होता है।"

जो जातियाँ उस समय अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही थीं, उनको ऐसा अनुभव हुआ कि आज हमने अपना एक बड़ा सहायक और हितैषी खो दिया। अफ्रीका के हब्शी नेताओं ने कहा—"अफ्रीका निवासियों के स्वाधीनता-संघर्ष के लिए गाँधी जी का जीवन-कार्य सदैव एक प्रेरणादायक प्रकाश की तरह बना रहेगा। "अमेरिका के सबसे बड़े अखबार 'न्यूयार्क टाइम्स' ने लिखा कि—"गाँधी जी अपने उत्तराधिकार स्वरूप एक ऐसी आध्यात्मिक शक्ति छोड़ गए हैं, जो भगवान् के निर्देशित समय पर अवश्य ही हथियारों और हिंसा की दूषित नीति पर विजय प्राप्त करेगी।" न्यूयार्क के ही दूसरे समाचार पत्र 'पी० एम०' ने लिखा कि—"गाँधी के बलिदान से सिद्ध होता है कि, अब भी संसार के उद्धार के लिए कुछ आशा है।"

भारतवर्ष से हजारों कोस की दूरी पर रहने वाले इन विदेशी और अन्यधर्मी विद्वानों द्वारा महात्मा गाँधी के संबंध में प्रकट किये गये इस प्रकार के सैकड़ों उद्‌गारों से यह सिद्ध हो जाता है कि, वास्तव में वे 'युग-पुरुष' थे। ऐसे महामानव प्रकृति अथवा ईश्वर के नियमानुसार 'युग-परिवर्तन' के अवसर पर प्रकट होते हैं और संसार की परिस्थिति के अनुकूल सत्य-मार्ग का उपदेश देते हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यही होती है कि—वे जो कुछ कहते हैं उसके अनुसार स्वयं भी आचरण करके दिखला देते हैं, जिससे लोग उनका अनुसरण करने में समर्थ हो सकें। गाँधी जी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सर्वसाधारण को सत्य, अहिंसा और आत्म-त्याग का उपदेश केवल मुख से ही नहीं दिया, वरन् अन्याय के विरोध और जनकल्याण के लिए वे सदैव प्राण देने को तत्पर रहे और अंत में उन्होंने अपने इस निश्चय को कार्यरूप में परिणत करके दिखा दिया।

जैसे हम पहले बतला चुके हैं, स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् होने वाले सांप्रदायिक दंगों और भयंकर खून-खराबी से गाँधी जी बड़े खिन्न हुए और उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे प्राण देकर भी इस 'दुर्घटना' का प्रतिकार करेंगे। वे अच्छी तरह जानते थे, कि अंग्रेज राजनीतिज्ञों ने भारतवर्ष को आपत्तिग्रस्त करने के लिए ही हिंदू-मुसलमानों को भयंकर रूप से लड़ा देने की यह चाल चली है। अगर किसी विशेष उपाय से इस परिस्थिति का सुधार न किया गया, तो इन झगड़ों और दंगों का कभी अंत न होगा और देश तथा शासक वर्ग की जो शक्ति देश को प्रगति पथ पर अग्रसर करने में लगनी चाहिए थी; वह फौज, पुलिस और जेलों की व्यवस्था में ही खर्च होती रहेगी। इस स्थिति को देखकर उन्होंने अपना बलिदान करने का अंतिम निश्चय कर लिया और संप्रदायवादियों की घोर उत्तेजना तथा उग्रता को देखकर भी शांति स्थापन तथा हिंदू-मुसलिम एकता का कार्य पूरी शक्ति से करने में जुट गये। इसका नतीजा उन्होंने जैसा सोचा था, वही हुआ और हत्याकारी गोडसे ने स्वयं अमिट कलंक ग्रहण करके महात्मा जी को परमपद का अधिकारी बना दिया। यही देखकर वर्तमान समय के महाकवि सुमित्रानंदन पंत मुक्त कंठ से गा उठे—

**नव संस्कृति के दूत। देवताओं का करने कार्य।**
**आत्मा के उद्धार हेतु ही आये तुम अनिवार्य।।**
**सगुण होकर निर्गुण रूप से**
**जगत् त्राण किया भवकूप से।**
**सगुण से फिर निर्गुण हो गये**
**नियम है नट-नागर के नये।।**

*मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।*

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

**गायत्री परिवार** जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

**Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at**
**www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org**